MAHARAJA COLLEGE ,ARA

PG @ SEM- III

CC-10 : आधुनिक हिंदी काव्य

Unit – 1 साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)

साकेत (प्रकाशन वर्ष : 1932 ई.)

'साकेत' आधुनिक युग के हिन्दी भाषा में लिखित श्रेष्ठ महाकाव्यों में से एक हैं। इस महाकाव्य के रचनाकार द्विवेदी युग के महाकवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। इस ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1932 ई. में हुआ। यह ग्रंथ महावीर प्रसाद द्विवेदी के एक लेख में कवियों द्वारा उर्मिला उदासीनता पर खेद प्रकट करने के प्रतिफल के रूप में अवतरित हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी का यह आलेख रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आलेख से प्रेरित था। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत लिख कर कवियों द्वारा उपेक्षित उर्मिला की क्षतिपूर्ति का निश्चय किया। इस महाकाव्य का पूरा एक सर्ग उर्मिला को समर्पित है – वह नवम् सर्ग है। मैथिलीशरण गुप्त मूलतः रामभक्त हैं। साकेत वस्तुतः आधुनिक काल का खड़ी बोली हिन्दी में लिखित राम–काव्य है।

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

साकेत का कथानक भारत की प्रसिद्ध कथा रामकथा ही है। गुप्त जी ने पहले से चली आ रही रामकथा से बहुत कुछ ग्रहण कर अपनी रामकथा साकेत को नया रूप दिया है। यह महाकाव्य 12 सर्गों में रचित है । प्रस्तुत काव्य का आरंभ लक्ष्मण–उर्मिला के प्रेमालाप से होता है, जिसके अंत में राम के राज्याभिषेक की सूचना दे दी जाती है। भरत ननिहाल गए हुए हैं। भरत की अनुपस्थिति में राम का राज्याभिषेक को एक षड्यन्त्र बताकर दासी मंथरा रानी कैकेयी को भड़काती है। तब भरत की माता रानी कैकेयी का क्षुब्ध मातृहृदय राम वनवास और भरत के राज्याभिषेक की योजना बनाती है।

इसी योजना के फलस्वरूप राम और उनके साथ सीता एवं लक्ष्मण वन को प्रस्थान करते हैं। उर्मिला भी सीता की तरह पति के साथ वन–गमन का हठ कर सकती थी। किंतु तब लक्ष्मण अपने आराध्ययुग्म की सेवा भली–भांति नहीं कर सकते। इसलिए उर्मिला साथ जाने का प्रस्ताव न कर दारुण विरह को वरण करती है।

क्रमशः –